Vol 7 February 2014 No 8
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण

BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

दिन तो रह गए थोड़े

–स्व. श्री विश्वनाथ

इतने बरसों बहुत जी लिया
काम–काज भी खूब कर लिया
संतति–संपत्ति, नाम–धाम–सुख
ईश–कृपा से बहुत पा लिया
तृष्णा क्यों न छोड़ें।

मकड़ी–सा जाला बुनने में
स्वयं फँस गए मोह–जाल में
अब तो चेतें, अब तो जागें
झूठी ममता को अब त्यागें
मोह के बन्धन तोड़ें।

ईश्वर ने तो बहुत दिया है
एक अमानत उसे समझकर
शुभ कामों में उसे लगाएँ
दीन जनों का हाथ बटाएँ
काहे को धन जोड़ें।

मन छलिया है, मन चंचल है
हमें नचाता यह हर पल है
सबको है इसने भरमाया
वश में कौन इसे कर पाया
इसके बहकावे में मनुआ,
इधर–उधर क्यों दौड़े।

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE FOLLOWING DONATIONS:

1. Sh. Chander Datt, DA/99B Hari Nagar, New Delhi-64 Rs.500/-
2. Smt Madhu Pathak, 64, Vidya Vihar, New Delhi Rs. 500/-

Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010

Brahmarpan February 2014 Vol. 7 No.8
माघ–फाल्गुन 2070 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta
V.President
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

CONTENTS

1. दिन तो रह गए थोड़े 2
–स्व. श्री विश्वनाथ
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 7
–डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
4. तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो! (बोध कथा) 8
–महात्मा आनन्दस्वामी
5. शिवरात्रि बोधरात्रि 9
–प्रो. चन्द्रप्रकाश आर्य
6. बोली खंजर की धार तेरा फूले परिवार–लेखराम! 12
–प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
7. भारत के विज्ञानवेत्ता दार्शनिक : महर्षि कणाद 17
–डॉ. भवानीलाल भारतीय
8. ब्रह्म का स्वरूप 19
–आ. भगवानदेव विद्यालंकार
9. डॉ. अम्बेडकर के कश्मीर और आरक्षण सम्बन्धी विचार : कुछ संस्मरण 21
–बलराज मधोक, पूर्व संसद सदस्य
10. होली 26
11. आखिर देश की वन्दना में बुराई क्या है 28
–वेदप्रताप "वैदिक"
12. The Monk Who's A Youth Icon 31
-Swami Shantatmananda
13. What is An Ego? 34
I. Ego A False Reality
-Sadhguru
14. II. Say 'go' to Ego 35
-P.P. Wangchuk

संपादकीय

देश के राजनीतिक क्षितिज पर एक नए दल का उदय

इस नए दल का नाम 'आप' (आम आदमी पार्टी) है। इस दल के संस्थापक अरविंद केजरीवाल हैं। इस दल का उद्भव अन्ना हजारे के जनलोकपाल के लिए किए गए आंदोलन से हुआ। सरकार के नकारात्मक रवैये को देखते हुए अन्ना और किरण बेदी के विरोध के बावजूद केजरीवाल ने आंदोलन का रास्ता छोड़कर राजनीति में पदार्पण करने का रास्ता चुन लिया। इनका कहना था कि राजनीति के कीचड़ में उतरे बगैर इससे निजात नहीं मिल सकती। 2 अक्टूबर को गाँधी जयन्ती पर उन्होंने पार्टी बनाने की घोषणा की और दिल्ली में होने वाले चुनाव में सभी 70 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए। इनके दल के मुख्य मुद्दे बिजली, पानी की जनसामान्य के अनुकूल व्यवस्था, सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार का निवारण, स्त्रियों की सुरक्षा, दिल्ली की अन्य समस्याएँ आदि थे। इन्होंने पार्टी का चुनाव चिह्न झाड़ू रखा जिससे प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार की गंदगी को साफ किया जाएगा। इससे आम आदमी का भला होगा। इसका 'आम आदमी पार्टी' नाम मध्यम और निम्न वर्गों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए रखा गया। ऐसा हुआ भी। नवम्बर में चुनाव के लिए प्रचार के दौरान विभिन्न दलों को यही संभावना लगती थी कि यह कल की पार्टी क्या जीतेगी? इतना ही नहीं विभिन्न चैनलों के अनुमानकर्ताओं का भी यही अनुमान था कि 'आप' को ज्यादा से ज्यादा 8–10 सीटें मिलेंगी। परन्तु उनके अनुमान गलत निकले। 8 दिसंबर को जब परिणाम सामने आने लगे तो 'आप' की संख्या धीरे–धीरे बढ़ती गई और अन्ततः 28 सीटों के साथ वे दूसरे नम्बर पर आ गए और जब सरकार बनाने का प्रश्न हुआ तो अपने विरोधी काँग्रेस के सहयोग से वे सरकार बनाने में भी सफल रहे।

चुनाव जीतने के बाद 'आप' का नारा है "सिंहासन खाली करो

कि जनता आती है"। यह स्वतंत्र भारत का सबसे अनूठा चुनाव था। अब तक बड़े राजनीतिक दलों के नेता ए.सी. लगे कमरों में बैठकर जनता के लिए नीतियाँ बनाते थे अब ये स्वयं अपने भाग्य विधाता हैं। इनके प्रतिनिधि सड़कों पर जनता की शिकायतें सुनेंगे। परन्तु यह प्रयोग सफल नहीं रहा।

इस नई सरकार ने आम आदमी के लाभ के लिए बिजली और पानी की कीमतों में कटौती करके निम्न और मध्यम वर्ग को लाभ पहुँचाया है चाहे इससे संयुक्त परिवारों पर पहले से अधिक बोझ पड़ गया हो। नवनिर्वाचित मंत्रियों ने बड़े बंगले लेने से इंकार कर दिया। कारों पर लाल बत्तियाँ लगाने, मंत्रियों, अधिकारियों व दूसरे लोगों की गाड़ियों पर भी लाल बत्ती लगाना प्रतिबंधित कर दिया है।

'आप' के मंत्री अभी नौसिखिए हैं। उन्हें नए महौल में स्वयं को ढालने में कुछ समय लगेगा। 'आप' के नेताओं का इरादा सादगी का है। केजरीवाल (मुख्यमंत्री) ने दस बेड रूम वाले डुप्लैक्स फ्लैट का परित्याग कर छोटे फ्लैट में रहने का संकल्प किया है। उन्होंने सरकारी सुरक्षा अस्वीकार कर दी है जो शायद उचित नहीं है। सरकार की ओर से उपराज्यपाल ने वी.आई.पी. कल्चर समाप्त करने का इरादा जताया। कुछ अन्य दलों के नेता भी सादगी पसन्द हैं – जैसे– गोआ के मुख्यमंत्री भी मनोहर पर्रिकर सादगी और शुचिता के प्रतीक हैं। वे मोटर साइकिल पर आते हैं, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री मानिक सरकार दो कमरों के मकान में रहते हैं और काँग्रेस के मुरली देवड़ा जनता से घुलमिलकर खुलेआम सरकार के फैसलों पर बहस करते हैं। इन नए जन नेताओं को भी प्रजा के करीब और प्रजा जैसा दिखना होगा, तभी 'आप' आम आदमी की पार्टी कही जा सकेगी। 'आप' के प्रायः सभी नेता अनुभवहीन है। अतः वे ऐसे बयान दे देते हैं जो समयानुकूल और राष्ट्रहित में नहीं हैं, जैसे–कानून मंत्री का अपने सचिव को आदेश देना कि न्यायाधीशों की बैठक उनके कक्ष में बुलाई जाए। इसी तरह 'आप' के नेता प्रशान्त भूषण के कश्मीर में सेना की तैनाती

के मसले पर जनमत संग्रह कराने के बयान पर हंगामा हो गया। इसकी काँग्रेस, भारतीय जनता पार्टी समेत सभी राजनीतिक दलों ने आलोचना की।

इधर लोकसभा चुनावों पर भी 'आप' की नजर है। उसमें भी केजरीवाल ही मुख्य चेहरा होंगे। इस बारे में उनके प्रमुख नेता योगेन्द्र यादव ने तो यहाँ तक कह दिया कि मैं अरविन्द केजरीवाल के प्रधानमंत्री पद पर चुने जाने का सपना देख रहा हूँ। देखते हैं कि उनका सपना पूरा होता है या नहीं। वे दिल्ली की सातों सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े करना चाहते हैं। उनका दूसरा मुख्य लक्ष्य हरियाणा है। इसके मुख्यमंत्री पद के लिये योगेन्द्र यादव का नाम उछाला जा रहा है। यों 'आप' सभी राज्यों में चुनाव लड़ना चाहती है। वहाँ इन्होंने कार्यालय भी स्थापित कर लिए हैं। ये विभिन्न राज्यों में किन-किन मुद्दों को उठाएगी, यह लगभग तय कर लिया है।

'आप' की देखादेखी राहुल गाँधी भी अपने चुनाव प्रचार को नई दिशा देने में लगे हैं। जैसे 'आप' ने दिल्ली में अल्पमत में होने पर सरकार बनाने के लिए जनता की राय माँगी थी, उसी प्रकार राहुल भी अपने चुनाव घोषणा-पत्र पर जनमत संग्रह कराने का विचार कर रहे हैं।

'आप' सरकार ने अपने कुछ वायदे पूरे कर दिए हैं परन्तु अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। भ्रष्टाचार, मँहगाई, स्त्री-सुरक्षा आदि मुद्दों पर अभी काफी ध्यान देने की आवश्यकता है। वे अपने भावी कार्यक्रमों को यदि नई दिशा दे सकेंगे तो इन्हें जनता का और विश्वास मिलेगा। यदि वे इन मुद्दों और दिल्ली की समस्याओं का पूरी तरह समाधान नहीं कर सके तो इन्हें भी बाकी दलों की तरह निराश होना पड़ेगा। हाल ही 'आप' ने जनता की समस्याओं को सुनने के लिए सचिवालय के बाहर जनदरबार लगाया। वहाँ आठ-दस हजार लोग जमा हो गए और हँगामा हो गया। भविष्य में इन्हें सोच-समझकर कदम उठाने होंगे।

संपादक

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-74)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

अतीन्द्रिय प्रकृति आदि पदार्थों के उपलब्ध न होने में इन दोनों को बाधक नहीं कह सकते क्योंकि प्रकृति आदि पदार्थ कभी दिखाई नहीं देते। ऐसी स्थिति में शिष्य प्रश्न करता है, उनके उपलब्ध न होने को उनके अभाव का ही साधक क्यों न समझा जाए। इस विषय में सूत्रकार नीचे दिए सूत्र में इसका समाधान करते हुए कहते हैं, सूत्र है-

सौक्ष्म्यात्तदनुपलब्धिः।।74।।

अर्थ- (तत्) प्रकृति आदि की (अनुपलब्धिः) अनुपलब्धि (सौक्ष्म्यात्) उनके सूक्ष्म होने के कारण है।

भावार्थ- प्रकृति आदि का उपलब्ध न होना उनके अति सूक्ष्म होने का कारण है। जगत् के मूलकारण सत्व, रजस्, तमस् अणुरूप हैं उनके इतने सूक्ष्म होने के कारण उनका इंद्रियों से ग्रहण करना संभव नहीं होता। जब वे इंद्रियों के द्वारा ग्रहण ही नहीं होते तब इंद्रियों के द्वारा उनका उपलब्ध न होना उनके अभाव को सिद्ध नहीं करता। जहाँ भी प्रकृति को व्यापक कहा है, वहाँ सत्व आदि की समष्टि दृष्टि से कहा गया है।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

All People belong to one family. We should love, help and care for each other. With the blessings of the Almighty Lord, it will be our first step and contribution towards a better, peaceful, divine world, leading us towards harmony and togetherness amongst all human beings.

-Swami Maheshwarananda

तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो!
(बोध कथा)

–महात्मा आनन्दस्वामी

महर्षि दयानन्द अन्तिम साँस ले रहे थे। सारे शरीर में दर्द था। लोग अशांत थे कि कब क्या होगा। उनके मुखमण्डलों पर उदासी थी, आँखों में आँसू। महर्षि ने मुस्कराते हुए कहा– "कौन–सी तिथि है आज? कौन–सी घड़ी है इस समय?"

पास खड़े एक व्यक्ति ने बताया कि तिथि कौन–सी है, समय क्या हुआ है।

महर्षि बोले– "तो अब खिड़कियों को खोल दो! बाहर की वायु को आने दो! पंछी का मार्ग न रोको! मेरे पीछे आ जाओ सब लोग। गायत्री मंत्र का जाप करो।" और अब सब लोग जाप कर रहे थे तो महर्षि ने अन्तिम साँस लेते हुए कहा– "तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो!" इसके अतिरिक्त दूसरी कोई प्रार्थना नहीं की, कोई दूसरी याचना भी नहीं की।

राज़ी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।
याँ यूँ भी वाह वा है, और वूँ भी वाह वा है।।

रणवीर को फाँसी के दण्ड की आज्ञा हुई। सैशन जज ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा– "इसे गले में रस्सी डालकर तब तक लटकाए रक्खा जाय, जब तक प्राण न निकल जायें।" एक कोलाहल मच गया हर ओर। लोग सहानुभूति के लिए मेरे पास आने लगे। रोनी सूरत बनाकर, उदास चेहरा लेकर। कभी–कभी आँखों में आँसू भरकर वे मेरे पास आते। मुझे हँसता हुआ देखकर आश्चर्य से कहते, "तेरी छाती में हृदय है या पत्थर? तेरे पुत्र को फाँसी की आज्ञा हो गई, उसकी मृत्यु उसके समक्ष खड़ी है और तू अब भी हँसता है?"

तब मैं गम्भीरता से कहता– "मुझे अपने ईश्वर पर विश्वास है। यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि मेरा रणवीर मेरे पास आ जाय तो संसार की कोई शक्ति उसे मार नहीं सकती और यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि वह मेरे पास न आय तो फिर संसार की कोई शक्ति उसे बचा नहीं सकती। तब मैं रोऊँ किसलिए?"

तुम्हारी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण।
मेरी चाही मत करो, मैं मूरख नादान।।

शिवरात्रि बोधरात्रि

–प्रो. चन्द्रप्रकाश आर्य

जागरण का पर्व

शिवरात्रि देश का पावन पर्व है; बोध एवं ज्ञान का पर्व है; जागरण का पर्व है। यह पूरे देश में हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस पर्व पर लोग सारी–सारी रात जागते हैं तथा दूसरों को भी जगाते हैं।

इस रात दयानन्द भी जागे थे, जिसके फलस्वरूप उनको वेद का ज्ञान प्राप्त हुआ। बाद में उन्होंने अपना सारा जीवन वेद के ज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने में लगा दिया। वे वेद को परम प्रमाण मानते थे। 'सत्यार्थप्रकाश' के अन्त में उन्होंने लिखा है कि "चारों वेदों को निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण मानता हूँ, वे स्वयं प्रमाण स्वरूप हैं जैसे सूर्य या प्रदीप अपने स्वरूप के स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं वैसे चारों वेद हैं।"

वेद परम प्रमाण

उनसे पहले और उनके समकालीन किसी समाज सुधारक, सन्त एवं महात्मा ने वेदों की ओर हमारा ध्यान नहीं खींचा। "हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास" पृष्ठ 12–13 (नागरी प्रचारिणी सभा काशी, संस्करण प्रथम संवत् 2021 विक्रमी) में लिखा है कि "स्वामी जी ने वेदों को प्रमाण मानकर भारतीय संस्कृति की नई व्याख्या की। सच्चे आर्य धर्म में मूर्ति पूजा, जातिवाद, बाल विवाह और बहुदेवतावाद का कोई स्थान नहीं। स्वामी जी ने हिन्दू समाज को नवजागरण का सन्देश दिया और उसमें निज गौरव और निज देश के अभिमान को जाग्रत किया।" आखिर स्वामी जी ने वेदों को ही परम प्रमाण या स्वतः प्रमाण क्यों माना? इसका उत्तर हमें मनुस्मृति में मिलता है।

मनु. (2/6) ने कहा है कि वेद ही धर्म का मूल है "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्"। (मनु. 2/13) फिर कहते हैं कि धर्म के बारे में जानने वालों के लिए वेद ही परम प्रमाण हैं– "धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।" मनु.(12/2) यहाँ तक कहते हैं कि वेद के तत्व को जानने वाला चाहे किसी भी आश्रम में रहता हुआ अपने कर्तव्य कर्म करता है, तो वह इसी लोक में ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। "वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो...ब्रह्मभूयाय कल्पते" मनु. (12/102) जिस वेद की मनु ने इतनी महिमा बताई और जिसकी प्रतिष्ठा के लिए दयानन्द ने अपना सारा जीवन वार दिया, उस वेद का धर्म क्या है? मानव मात्र' के

लिए सन्देश क्या है? मानव समाज के लिए उसकी शिक्षा क्या है?

ऋग्वेद (8.89 मंत्र 2–4) कहता है कि 'हे मनुष्यो, तुम परस्पर मिलकर चलो; परस्पर मिल कर संवाद करो; तुम्हारे मन एक समान ज्ञान वाले हों। सब मनुष्यों का विचार एक हो, मन एक हो, चिन्तन एक हो।' तीसरा मंत्र फिर कहता है कि तुम सबका संकल्प एक जैसा हो, सब मनुष्यों के हृदय समान हों, सबका मन समान हो।

सब, मनुष्यों के लिए जल पीने (पेयजल) की व्यवस्था समान हो, सबके लिए अन्न का भाग या विभाजन, वितरण समान हो। सब मनुष्य परस्पर मिलकर, एक होकर रहें, जैसे रथ के पहिये की नाभि में अरे जुड़ कर, मिल कर रहते हैं।

वेद के ये मंत्र कितनी ऊँची उड़ान भरते हैं। समस्त मानव जाति के लिए परस्पर मेल, संवाद, सहयोग, मन की एकता, हृदय की समानता, विचारों की समानता, चिन्तन में समानता की बात करते हैं। सबके मन और हृदय संकल्प और विचार एक हो जायें, तो मानव जाति का कल्याण हो जाए। यही वेद का धर्म है, यही वेद का सन्देश है। किन्तु आज मानव समाज में हृदय और मन की समानता, विचारों की एकता, परस्पर सहयोग और एकजुटता का अभाव है और इसी कारण विश्व में अशान्ति है, सामाजिक, आर्थिक स्तर पर भारी असमानता है, विषमता है।

मानव समाज विभक्त है

राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टि से मानव समाज परस्पर बँटा हुआ है। इस्लामी आतंकवाद एवं कट्टरवाद से सारा विश्व पीड़ित है। इस विश्वव्यापी जिहाद से अमेरिका, रूस, चीन, भारत आदि सभी देश पीड़ित हैं, किन्तु 2000 में न्यूयार्क में सम्पन्न हुए संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन में इसके खिलाफ कोई ठोस प्रस्ताव या कदम नहीं उठाये गये, क्योंकि कुछ बड़े देशों में परस्पर सहयोग, सहमति नहीं थी। यदि प्रमुख विकसित देशों द्वारा एक हो कर एक मन से, समान विचार से कुछ कदम उठाये जाते तो इस समस्या का हल हो सकता था। रंगभेद, नस्लभेद, जातिभेद, लिंगभेद, विश्व की सामाजिक विषमता, असमानता के सूचक हैं। ये आज भी जारी हैं क्योंकि परस्पर मानवीय एकता, एकजुटता का अभाव है।

सबको अन्न–जल की समान सुविधा हो

यही नहीं, वेद ने यह भी कहा था कि सब मनुष्यों के लिए

अन्नजल की व्यवस्था समान हो, सबको भोजन पानी मिले। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम से गरीबों की संख्या में कोई कमी नहीं आई। रिपोर्ट के अनुसार आज विश्व में दो अरब लोग अल्पधिक गरीब हैं। एक ओर इथियोपिया में युद्ध, अकाल और भुखमरी के कारण 20 लाख लोग मारे जा चुके हैं, तो दूसरी ओर राष्ट्रसंघ की उपरोक्त रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 70 प्रतिशत साधनों पर बीस प्रतिशत अमीरों का कब्जा है। संसार के सबसे निर्धन 47 देशों के सकल उत्पादन से भी अधिक पूंजी संसार के सर्वाधिक धनी तीन चार व्यक्तियें के पास है।

इतनी भयानक असमानता क्यों? क्योंकि विश्व के इन अमीर देशों और व्यक्तियों में सहृदयता, मन की, हृदय की समानता नहीं हैं। उनमें परस्पर समानता की, सबकी गरीबी, भुखमरी दूर करने की भावना नहीं हैं। सबके लिए अन्न, भोजन जुटाने का एक विचार नहीं हैं। संयुक्त राष्ट्र के सहस्राब्दी शिखर सम्मेलन का घोषणा-पत्र इस बात का प्रमाण है। वहाँ इस बढ़ती हुई गरीबी और भुखमरी की समस्या को रोकने के लिए कोई ठोस उपाय नहीं किए गए, क्योंकि विकसित देशों में विकासशील निर्धन देशों के प्रति सहृदयता, सहानुभूति की भावना नहीं है।

भारत में भी अन्न जल का विभाजन समान नहीं। वर्ष 2000 के मई जून में गुजरात, राजस्थान में पानी का भारी अकाल पड़ा। लोगों को पीने के लिए पानी नहीं मिला। हजारों मवेशी मारे गए। देश में लाखों लोगों को भरपेट भोजन नहीं मिलता। अर्थशास्त्रियों के अनुसार लगभग 35-36 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचे का जीवन जी रहे हैं। ऐसा क्यों हुआ? देश के नेताओं, शासकों, जनप्रतिनिधियों के विचारों में एकता नहीं आई; उनके मन और हृदय समान नहीं हुए। जनता के कल्याण के लिए उनका चिन्तन एक समान नहीं हुआ? वे परस्पर विरोध में एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने में लगे रहते हैं। प्रत्येक दल तथा उसके नेता राजनैतिक लाभ उठाने में लगे रहते हैं। स्थिति चाहे कोई भी क्यों न हो, वे अपना राजनीतिक स्वार्थ पहले देखते हैं।

जब तक हमारे मन नहीं मिलेंगे, मनुष्यों के संकल्पों और विचारों में एकरूपता, समानता नहीं आयेगी, तब तक मानव समाज का कल्याण नहीं हो सकता। वेद के उपरोक्त मंत्रों में जो कहा गया है, उस पर विचार करने की आवश्यकता है।

करनाल-132001

बोली खंजर की धार तेरा फूले परिवार–लेखराम!

–प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

देश, धर्म व जाति की रक्षा व सेवा करते हुए पं. लेखराम जी ने कई कीर्तिमान स्थापित किये। वैदिक धर्म–प्रचार व जाति रक्षा के लिए इस बलिदानी सेनानी को कई मोर्चों पर लड़ना पड़ा। उन्होंने संघर्ष व संग्राम का जो मार्ग अपनाया, वह किसी की आज्ञा से नहीं प्रत्युत स्वेच्छा से अपनाया। उनके बारे में यह भ्रामक प्रचार किया गया कि उन्होंने इस्लाम या ईसाई मत के विरुद्ध लिखा। सच्चाई यह है कि उन्होंने इन मतों के विरुद्ध जो कुछ भी लिखा वह आत्म–रक्षा में लिखा। पहल दूसरों ने की। पण्डित जी ने तो उत्तर दिया। इस तथ्य को कौन झुठला सकता है?

ऋषि दयानन्द जी महाराज पर अभियोग चलाने की विरोधियों ने धमकी दी परन्तु पण्डित लेखराम पहले आर्य विद्वान् गवेषक लेखक थे जिनके साहित्य पर मुसलमानों ने केस चलाया। परन्तु विरोधी इन मुकद्दमों में हार गए। यह ठीक है कि आर्यसमाज के इतिहास का पहला अभियोग मुंशी इन्द्रमणि पर मुसलमानों द्वारा किया गया केस था, ऋषि दयानन्द जी ने मतांधता से टक्कर लेने के लिए राष्ट्रीय भाव से व विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिए मुंशी जी के केस में सहयोग किया व करवाया।

कोर्ट में तो विरोधी पराजित हो गये परन्तु कादियानी मिर्जा ने अपना नया मत चलाने व पैगम्बरी की दुकान चमकाने के लिए, पाखण्ड की पोल खोलने वाले पं. लेखराम जी को अपने मार्ग में बहुत बाधक जाना। मिर्जा ने पण्डित जी की युक्तियों का उत्तर देने में स्वयं को अक्षम पाकर पण्डित जी को मौत की धमकियाँ देकर डराना चाहा। पण्डित जी के पुरुषार्थ और लेखनी व वाणी के प्रभाव से अनेक हिन्दू, सिख धर्मच्युत होने से बचे। मिर्जा ने वेद, राम, कृष्ण, माता कौशल्या, श्रीकृष्ण व गीता पर कई घृणित वार किये। गाय के बारे में तो यहाँ तक लिखा कि यजुर्वेद में एक कहानी दी गई है। इसके अनुसार गाय पूर्व जन्म में एक वेश्या ब्राह्मणी थी। पण्डित जी ऐसे सब निराधार घृणित आक्षेपों का उत्तर देते रहे। उनके साहित्य ने

जाति में जनजीवन का संचार किया।

पण्डित लेखराम जी की तेजस्वी वाणी व लेखनी ने कई युवकों के जीवन की दिशा ही बदल दी। आचार्य रामदेव, मेहता जैमिनि, पं. ठाकुरदत्त अमृतधारा, महात्मा विष्णुदास (स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को वैदिक धर्म-सेवा की प्रेरणा देने वाले) बख्शी रामरत्न लाहौर, प्रिं. देवीचन्द जी होशियारपुर, मौलाना हैदर शरीफ हैदराबाद, मौलाना अब्दुल अजीज़ (ला. हरजसराय) इत्यादि पर वैदिक धर्म की छाप लगाने में आपका विशेष हाथ था।

जब स्यालकोट छावनी में दो सिख युवकों को मुसलमान बनने से कोई न रोक सका तब सिंह सभा, स्यालकोट की गुहार पर पं. लेखराम जी वहाँ पधारे। वे दोनों युवक धर्मच्युत होने से बच गए। सिख भी तब आर्यपथिक का गुणगान करते हुए नहीं थकते थे। पं. लेखराम जी को मिर्जा ने मौत की धमकी देते हुए कभी कुछ लिखा तो कभी कुछ। कादियाँ में आसमानी डाकघर था। इलहामों की वर्षा होती ही रहती थी। मिर्जा जब चाहते थे इलहाम उतर आता था। मिर्जा पर कितने इलहाम उतरे इसका ठीक-ठीक पता तो मिर्जा को भी नहीं था। एक स्थान पर मिर्जा ने अपने इलहामों की संख्या दस लाख तक लिखी है। इसे ठीक मानें तो प्रतिदिन अल्लाह मियाँ की डाक 14-15 बार कादियाँ आती थी।

पण्डित जी की हत्या के लिए जिस फरिश्ता को अल्लाह ने नियुक्त किया, वह मिर्जा से पण्डित जी का पता पूछने आया था। सर्वज्ञ अल्लाह को तो पण्डित जी का अता-पता ही नहीं था। अल्लाह ने तो मिर्जा को पण्डित जी की आयु भी ठीक न बताई। पण्डित जी के जन्म स्थान तक का अल्लाह को ज्ञान नहीं था। अल्लाह, इस्लाम पैगम्बर की दुहाई देकर मिर्जा ने पण्डित जी की हत्या का जो षड्यंत्र रचा, उसमें वह सफल रहा, परन्तु उसे मुसलमानों ने भी फटकार ही दी।

पण्डित जी के बलिदान विषयक मिर्जा की भविष्यवाणियों व इलहामों की कुछ समीक्षा करने से पूर्व पण्डित जी के जीवन व बलिदान के गौरव पर संक्षेप से कुछ लिख दें। पण्डित जी की निडर सत्यवाणी का लोहा सभी मानते थे। स्वामी श्रद्धानन्द सरीखे तेजस्वी नेता ने एक बार उनके पाँव दबाये। श्री

रामविलास सारडा व पं. धर्मचन्द जी अमृतसरी उनकी खरी-खरी सुनकर सिर झुका लेते थे।

घर में तेल न होने के कारण रात के समय दीपक न जला तो लिखने की ललक उनको महात्मा मुंशीराम की कोठी पर खींचकर ले गई। वे कमालिया प्रचार करने गए तो दिन भर खाली क्यों रहें, मेहता जैमिनि (तब विद्यार्थी थे) को लेकर कुछ मील की दूरी पर एक ग्राम मे प्रचार करने चले गए। ऐसे थे वे लग्नशील मिशनरी! ऋषि-जीवन की खोज के लिए मेवाड़ गए तो भीषण ज्वर से रुग्ण हो गये। तब ज्वर भी जानलेवा रोग था। आपने न तो घर वालों को सूचना दी और न ही सभा प्रधान महात्मा मुंशीराम जी को पता दिया। महात्मा हंसराज ने लिखा है कि कहीं से समाचार आ जाय कि कोई हिन्दू विधर्मी बनने वाला है, वे सब काम छोड़कर वहाँ पहुँच जाया करते थे। मस्जिदों में मौलवियों से धर्मवार्ता करने स्वयं चले जाते थे। मिर्जा गुलाम अहमद ने लिखा है कि अपने बलिदान से पूर्व वे मुझसे वार्तालाप करने लाहौर में स्टेशन के पास एक मस्जिद में आ गए। मिर्जा ने स्वयं लिखा है कि नमाज़ का बहाना बनाकर मैंने लेखराम से पिण्ड छुड़ाया।

पैगम्बर के दोनों पुत्रों- बशीर महमूद व बशीर अहमद ने भी इस घटना का उल्लेख किया है, परन्तु दोनों ने जो कुछ लिखा है वह एक दूसरे से व बाप के लेख से मेल नहीं खाता। पण्डित जी अपने बलिदान से कुछ समय पहले बटाला के पास एक ग्राम में एक आर्य सिख के घर एक संस्कार के लिए आए थे। वहाँ से फिर कादियाँ पधारे। मिर्जा को पता लग गया। मिर्जा को सामने आने की हिम्मत ही न हुई। यह कादियाँ आगमन या कादियाँ पर पं. लेखराम की अन्तिम चढ़ाई की बात भी स्वयं नबी ने लिखी है। लेखराम मौत को ललकारते हुए गली-गली नगर-नगर घूमे।

मिर्जा अपने जीवन में कभी भी पण्डित जी के सामने न आ सके। पण्डित जी दो मास तक नबी के चमत्कार देखने के लिए कादियाँ डेरा डाले बैठे रहे परन्तु मिर्जा इलहामी कोठे से बाहर न निकला। पण्डित जी कई मित्रों सहित इलहामी कोठे पर ही पहुँच गए। सिंह सभा अखबार के सम्पादक भी साथ थे। आपने पण्डित जी पर कई पुस्तकें लिखीं। आप लिखते

हैं कि पण्डित जी ने अपने हाथ की हथेली पर कुछ लिखकर मुट्ठी बन्द करके मिर्जा को चुनौती दे डाली कि अपने इलहामी खुदा से पूछकर बताओ इस पर क्या लिखा है। मिर्जा बगलें झाँकता रह गया। सारी चमत्कार दिखाने की डींग मिट्टी में मिल गई। यह घटना सिंह सभा के सम्पादक ने अपनी एक पुस्तक में लिखी है। वह प्रत्यक्षदर्शी था ही।

लाहौर में एक अबला हिन्दू कन्या का अपहरण हो गया। पण्डित जी को पता चला। वह एक युवक को लेकर उसे मुसलमानों की भीड़ में लाहौर की एक मस्जिद में से बचाकर ले आये। ऐसे साहस के अंगारे, न्यारे प्यारे लेखराम का गुणकीर्तन करने में यह लेखनी अक्षम है।

ऋषि मिशन के दीवानों के लिए पं. लेखराम एक आदर्श हैं। श्री पं. रामचन्द्र जी देहलवी ने 1954 में मुझे लिखकर दिया था कि आर्योपदेशकों व जातिरक्षकों के लिए पं. लेखराम एक आदर्श हैं। आर्यसमाज में पं. लेखराम जी का नाम व उपनाम 'आर्य मुसाफिर' दोनों ही एक उपाधि बन गए। धर्महित जीना-मरना पं. लेखराम जी से ही आर्यों ने सीखा। धर्म पर शीश कटाने वाले आर्य हुतात्माओं को ज्योति देने वाले महर्षि दयानन्द जी थे, यह सत्य है परन्तु निर्भय होकर धर्म रक्षा के लिए प्राण देने का पाठ इस युग में पं. लेखराम ने ही पढ़ाया। आर्यसमाज के सब हुतात्माओं ने उनको अपना प्रेरणास्रोत माना।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के तो वे सखा थे। वीरवर तुलसीराम व प्राणवीर राजपाल को धर्मसेवा की घुट्टी पिलाने का गौरव पं. लेखराम जी को ही प्राप्त है। वीरवर रामचन्द्र, भक्त फूलसिंह, हुतात्मा मेघराज व श्याम भाई सबके जीवन पर आपकी रंगत स्पष्ट दिखाई देती है। हुतात्माओं की यह यशस्वी मण्डली पं. लेखराम का ही परिवार है। मैंने एक गीत में लिखा था-

बोली खंजर की धार तेरा फूले परिवार।
जागा सारा संसार तेरी सुनकर हुँकार।।
स्वामी श्रद्धानन्द शूर जिसके मुखड़े पै नूर।
नाथू तुलसी खोजे तेरे चरणों की धूल।।
आई बनकर वरदान तीखी छुरियों की धार।।

आर्यो! यह मत भूलना कि वीर राजपाल, स्वामी श्रद्धानन्द जी

व महाराज नाथूराम की हत्या पर भी कादियानी गद्‌गद् हो उठे थे। इनकी हत्या करवाने के पीछे भी कादियानी षड्‌यन्त्रकारियों का हाथ अवश्य था। हमारे शहीदों का लहू रंग ला रहा है। हर्ष का विषय है कि समझदार मुसलमानों ने यथा मौलाना सनाउल्ला साहेब, मौलाना रफीक दिलावरी, जनाब फोनिक्स जी, मौलाना अब्दुल्ला मेमार इत्यादि ने पं. लेखराम की हत्या के लिए मिर्जा के षड्‌यन्त्रकारी कुकृत्य की भर्त्सना करते हुए इसे एक शैतानी काम घोषित किया था। पण्डितजी को कायर हत्यारे ने छल-कपट से मारा। पं. लेखराम ने सबसे पहले धार्मिक कादियानी पैगम्बर के ढोंग की पोल खोली।

इस समय मुसलमानों में मिर्जाइयत का सबसे बड़ा सर्जन मैं जनाब अनवर शेख साहेब को मानता हूँ। आपकी 'फितनाय कादियानी' पुस्तक 'गागर में सागर' है। आपने ही मुसलमानों में इस सरकार द्वारा आरोपित पौधे मिर्जई मत की निरन्तर पोल खोली। इस सरकारपरस्त नबी ने लाला लाजपतराय आदि देशभक्तों व क्रांतिकारियों को 'नमक हराम' लिखा। किसका नमक हराम? अंग्रेजो का। ऐसी-ऐसी गालियाँ इसने हमारे देशभक्त बलिदानियों को दीं।

मिर्जा जी ने स्वयं लिखा है कि उन्हें 24 घंटों में कम-से-कम एक सौ बार पेशाब के लिए जाना पड़ता है। अर्थात् हर पन्द्रह मिनट में एक बार। अनवर शेख ठीक ही लिखते हैं कि इनका भक्ति-भजन तो फिर सन्देहास्पद ही है। आपने भी यही लिखा है कि पैगम्बरी मिर्जा का व्यापार था। मिर्जा की मौत लाहौर में हैजा से हुई। मौत का फरिश्ता उनको कादियाँ से पकड़कर घटनास्थल लाहौर ले आया। यहीं तो पण्डित लेखराम की हत्या की गई थी। सच झूठ का निर्णय मौत ने कर दिया। मिर्जा को न अपने वंश का पता था और न जन्म के वर्ष का। आपने मिर्जाई मत को एक 'रुहानी अफीम' लिखा है। "झूठ की भी कोई सीमा होती है, मिर्जा जी तो सब सीमाएँ लाँघ गए।" यह है अनवर शेख साहेब का मत इस बरतानवी मसीह के बारे में।

वेद सदन, अबोहर (पंजाब)

भारत के विज्ञानवेत्ता दार्शनिक : महर्षि कणाद

–डॉ. भवानीलाल भारतीय

विधिवेत्ता आचार्य मनु की इस उक्ति में पर्याप्त सच्चाई है कि भारत (पुराना नाम आर्यावर्त) के विद्वद्वर्ग के समीप संसार के विभिन्न देशों से ज्ञान, विज्ञान तथा विद्या एवं चारित्र्य की शिक्षा ग्रहण करने के लिए जिज्ञासुओं के समूह के समूह आया करते थे। इसका कारण भी था। यहाँ के ये गुरुजन शास्त्रीय और लौकिक, आध्यात्मिक तथा भौतिक, दूसरे शब्दों में परा और अपरा विद्याओं में निष्णात होते थे। ऐसे ही एक विज्ञानवेत्ता दार्शनिक ऋषि थे कणाद। सांसारिक वैभव के प्रति नितान्त उदासीन तथा अर्थ संचय के प्रति उपेक्षावृत्ति रखने वाले कणाद के नाम को लेकर यह उक्ति प्रसिद्ध है कि अनाज की फसलों के कट जाने तथा खेतों के खाली हो जाने पर जो बचे-खुचे अनाज के दाने वहाँ पड़े रह जाते उन्हें बीन कर ये ऋषि अपना भोजन बनाते और त्यागमय जीवन व्यतीत करते थे। इसीलिए उनका नाम कणाद (कणों को भक्षण करने वाले) पड़ गया था।

वायुपुराण में आये इतिवृत्त से पता चलता है कि सौराष्ट्र में द्वारिका के समीप का प्रभास पट्टन उनका जन्म स्थान था। सोम शर्मा को उनका गुरु बताया गया है। ईसा के पर्याप्त समय पूर्व जन्मे कणाद का गोत्र कश्यप था। अणु (परमाणु-एटम) सिद्धान्त के आद्य प्रवर्तक कणाद ने जिस वैज्ञानिक तथ्यों से युक्त दर्शन का उपदेश दिया उसे वैशेषिक दर्शन कहा जाता है। ऋषि दयानन्द को वैशेषिक दर्शन में विशेष व्युत्पन्नता प्राप्त थी तथा प्रसिद्ध विदुषी रमा बाई ने मेरठ में रह कर पर्याप्त समय तक स्वामी जी से इस दर्शन का अभ्यास किया था। सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में जहाँ स्वामीजी ने तत्त्वविचार विषय को निरूपित किया है वहाँ उन्होंने सर्वाधिक लगभग छियालीस वैशेषिक सूत्रों को अर्थ सहित उद्धृत किया है। परमाणु के बारे में सामान्य उक्ति है कि किसी झरोखे की

जाली से आने वाली धूप में सूर्यकरणों से उड़ते हुए दिखने वाले सूक्ष्म कणों का (एक का) साठवाँ भाग परमाणु कहलाता है। यह प्रकृति का सूक्ष्मतम अंश है। महर्षि दयानन्द ने कणाद दर्शन के परमाणु तथा कापिल दर्शन के प्रकृति का समन्वय करते हुए 'प्रकृति के परमाणु' इस पद का प्रयोग किया है। वैशेषिक दर्शन में छः मूल तत्वों को स्वीकार किया गया है– ये हैं– द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय। कालान्तर में इनमें 'अभाव' को जोड़कर सात पदार्थों की कल्पना की गई। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल और दिशा के अतिरिक्त मन और आत्मा की भी गणना की गई है। वैशेषिक दर्शन (सूत्रात्मक) कणाद प्रोक्त, दर्शन का मूलग्रन्थ है। इस पर प्रशस्तपाद भाष्य का अध्ययन करने की संस्तुति–ऋषि दयानन्द ने की है तथा तर्क संग्रह (अन्नं भट्ट कृत) आदि परवर्ती अनार्ष ग्रन्थों के पठन–पाठन का निषेध किया है।

कालान्तर में न्याय–वैशेषिक को समान विचारधारा वाले दर्शन कहा गया तथा 'कणादगौतमीयम्' आदि ग्रन्थों में इनका साथ–साथ विवेचन किया गया। इस दर्शन की मान्यता है कि उक्त छः या सात तत्वों के साधर्म्य तथा वैधर्म्य के समुचित ज्ञान से तत्त्वज्ञान होता है जो अन्ततः मनुष्य को निःश्रेयस (मोक्ष) के मार्ग पर ले जाता है। इसी प्रकरण में कणाद ने धर्म की व्यापक तथा तथ्यपरक परिभाषा देते हुए उसे अभ्युदय (सांसारिक उन्नति जो भौतिक उन्नति का पर्याय है) तथा निःश्रेयस (पारलौकिक उन्नति, ईश्वरप्राप्ति तथा मोक्ष) को सिद्ध करने वाला बताया है। कालान्तर में कणाद प्रतिपादित मूल सिद्धान्तों की व्याख्या में पर्याप्त साहित्य लिखा गया है।

3/5 शंकर कालोनी, श्री गंगानगर

ब्रह्म का स्वरूप

-आचार्य भगवानदेव विद्यालंकार

(गतांक से आगे.....)

ईश्वर एक ही है। लेकिन ईश्वर के नाम असंख्य हैं। महर्षि दयानन्द जी ने ईश्वर के सौ नामों का सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में उल्लेख करते हुए कहा है कि ईश्वर के ये नाम समुद्र में बिन्दु के समान हैं। ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर, उसके नाम प्रचलित हैं। ईश्वर के उन्हीं नामों में से ईश्वर का 'ब्रह्म' नाम है। जो महानता का प्रतीक है। ईश्वर अन्य जीवों की अपेक्षा सबसे 'महान' है। सृष्टि की रचना करना, उसकी स्थिति, रक्षा करना और अन्त में प्रलय करना "परम ब्रह्म परमेश्वर" की ही महानता को प्रकट करता है। इसी प्रकार स्वामी दयानन्द जी ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में पर-ब्रह्म के अन्य नामों को इस प्रकार प्रकट किया है- "ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

ब्रहम निर्गुण भी है और सगुण भी है-

महर्षि दयानन्द जी ने ईश्वर को 'निर्गुण ब्रह्म' कहा है। ईश्वर निराकार है। निर्गुण है अर्थात् ईश्वर में जन्म धारण करने का गुण नहीं है। सत्व, रज और तम गुण नहीं हैं। रूप, रस, स्पर्श, गन्ध आदि जड़ पदार्थों के गुण नहीं हैं। अविद्या, अल्पज्ञता, राग, द्वेष, क्लेश, दुःख, मृत्यु आदि गुण न होने से ब्रह्म निर्गुण है। **'यो गुणेभ्यो निर्गतः सः निर्गुण ईश्वरः"**

सगुणः कस्मात्? "यो गुणैः सह वर्तते स सगुणः" अर्थात् परमात्मा में अनन्त गुण-सामर्थ्य होने से ब्रह्म-सगुण है। जैसे- सर्व सुख-दाता, पवित्रता, अनन्तबलयुक्त गुणों से युक्त है। परमेश्वर सर्वज्ञ, चेतन, आनन्दस्वरूप आदि गुण होने से सगुण है। अर्थात् ईश्वर के समान संसार के पदार्थों में भी निर्गुणता और सगुणता के लक्षण पाये जाते हैं।

इसलिये जिन्होंने प्रभु को, ज्ञानपूर्वक, बुद्धिपूर्वक, पूर्ण समझदारी

के साथ अपनाया है, वे तर जाते हैं। इस संसार रूपी भवसागर से पार हो जाते हैं और जो जन, उस ब्रह्म को नासमझी से, वेद-विरुद्ध विचारधारा से, अवैदिक ढंग से अपनाते हैं वे आचार्य शंकर के कथनानुसारः-

"**पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरपि जननि जठरे शयनम्**" वे लोग इस संसार के दुःखों के सागर में अज्ञानता के अन्धकार में डूब जाते हैं। वे बार-बार जन्म लेते हैं, बार-बार मरते हैं और बार-बार गर्भ की यातनाएँ सहते हैं। अतः उनके लिए ब्रह्मज्ञान के बिना सुख-प्राप्ति असंभव है।

ईश्वर क्या करता है?

'ईश्वर' ब्रह्म बनकर, महान् बनकर, सर्वशक्तिमान् बनकर, जीवों को शुभ-अशुभ, अच्छे और बुरे कर्मों का फल देता है।

"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्" (गीता)

ईश्वर न्यायकारी बनकर मनुष्यों के द्वारा किये गये शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य देता है। पण्डित बस्तीराम ने लिखा है-

"धन्य-धन्य तेरी कारीगरी करतार।
वह यथायोग्य बर्ताव करे, मिले रूओ रियायत कहीं नहीं।
दिन-राम न्याय में फर्क पड़े ना, तेरी लगी कचहरी कहीं नहीं।
जब ऋषि-मुनि और सन्त महन्त थके, गा-गा पाया पार नहीं।
जो करनी चाहे कर गुजरे, किसी काम में तू लाचार नहीं।
जो करदे सो नहीं बदल सके, किसी और का लेता सहारा नहीं।
सुखस्वरूप दरस दे अपना, खोल के अखण्डों द्वार।।

संसार में सहारे तो अनेक हैं जैसे- माता का, पिता का, भाइयों का, रिश्तेदार-सम्बन्धियों का सहारा। लेकिन कठोपनिषद का ऋषि कहता है कि-

एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।। (कठोपनिषद् 1/17)

अर्थात् उस परम ब्रह्म परमेश्वर का ज्ञान सर्वश्रेष्ठ है। उसका सहारा ही सर्वोत्तम है। उस सहारे को पाकर ही मनुष्य ब्रह्मलोक की महिमा को प्राप्त होता है।

97-विकास नगर, फेस-3, निकट-बालाजी मन्दिर,
नई दिल्ली-59, मो.9250906201

डॉ. अम्बेडकर के कश्मीर और आरक्षण सम्बन्धी विचार : कुछ संस्मरण

–बलराज मधोक, पूर्व संसद सदस्य

जम्मू–कश्मीर के सम्बन्ध में अंग्रेजी भाषा में लिखी मेरी पुस्तक 'जम्मू कश्मीर डिवाइडेड' (खण्डित कश्मीर) 1950 के शुरू में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक के प्रकाशन के कुछ सप्ताह बाद मुझे एक अनपेक्षित पत्र मिला। पत्र विधि मंत्री डॉ. अम्बेडकर का था। उन्होंने कभी आकर मिलने को कहा था। मैं समझ नहीं सका कि वे मुझसे क्यों मिलना चाहते हैं। मुझे उनसे कुछ काम नहीं था, इसलिए मैंने उसका कोई उत्तर नहीं दिया कुछ दिन बाद उनके निजी सचिव का पत्र आया। उसमें उसने डॉ. अम्बेडकर के पत्र का हवाला देते हुए उनसे मिलने को लिखा था और पूछा था कि मैं किस दिन और किस समय आऊँगा? पत्र में सायंकाल को आने का सुझाव था।

मैं एक दिन सायंकाल डॉ. अम्बेडकर के निवास पर पहुँचा। वे अपने बंगले के पास वाले आँगन में बैठे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। वे मुझे बड़े प्रेम और आदर से मिले और अंग्रेजी में बोले, "You are the first Indian author whose book I have read in ten years' time. I liked the book so much that I wanted to meet its author and that is why I have troubled you."

अर्थात् आप पहले भारतीय लेखक हैं, जिनकी पुस्तक मैंने गत दस वर्षों में पढ़ी है। मुझे पुस्तक इतनी अच्छी लगी कि मुझे लेखक से मिलने की उत्कंठा हुई। इसलिए मैंने आपको आने का कष्ट दिया है।

कुछ औपचारिकता के बाद, उन्होंने मेरा पूरा परिचय प्राप्त कर लिया, वे मतलब की बात पर आए। उन्होंने कहा 'कश्मीर समस्या अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का मोहरा बन गई है। आपकी पुस्तक इस समस्या की पृष्ठभूमि भी देती है और सम्भावित हल भी। मैं उसे अच्छी प्रकार समझना चाहता हूँ। यह कहकर वह मुझे अपने बंगले के अंदर ले गए। वहाँ एक कमरे में उन्होंने एक बड़ी मेज पर जम्मू–कश्मीर का एक बड़ा मानचित्र बनवा

रखा था। उन्होंने इस मानचित्र की सहायता से मुझे जम्मू-कश्मीर राज्य के विभिन्न भौगोलिक और भाषाई क्षेत्रों की रूप-रेखा समझाने और उनकी जलवायु, प्राकृतिक साधनों, राजनीतिक पृष्ठभूमि और जनाकांक्षाओं पर प्रकाश डालने को कहा। उस दिन उन्होंने एक घंटा मेरे साथ लगाया। यही क्रम दूसरे और तीसरे दिन भी चला। तीसरे दिन वे मुझे कहने लगे कि मैं मंदबुद्धि हूँ, मुझे समस्या को ठीक प्रकार समझने में समय लगता है।

समस्या के सभी पहलुओं को समझने के बाद उन्होंने कहा कि आपकी पुस्तक का व्यापक प्रचार होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि यदि मुझे स्वीकार हो, तो वे इस पुस्तक को अपने और मेरे संयुक्त लेखकत्व में किसी विदेशी प्रकाशक से इसके विदेश में प्रकाशन का प्रबंध कर सकते हैं।

इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर के साथ मेरी बौद्धिक मैत्री का प्रारम्भ हुआ, जो उनके जीवनपर्यन्त कायम रही। मैं उनसे अक्सर मिलने लगा और राजनीतिक तथा अन्य विषयों पर हमारी चर्चा होने लगी। कुछ बातों के संबंध में उनके विचार सुनकर मुझे विस्मयजनक प्रसन्नता हुई। मैंने उन्हें देश के अधिकांश तथाकथित राष्ट्रवादी नेताओं से बेहतर राष्ट्रवादी और बुद्धिजीवियों से बेहतर बुद्धिजीवी पाया।

संविधान में अस्थायी धारा 370, जिसके अनुसार जम्मू-कश्मीर को देश के अन्य राज्यों से भिन्न दर्जा मिला हुआ है और उस पर न भारत का संविधान लागू होता है और न बहुत से कानून, के औचित्य के संबंध में पूछने पर उन्होंने बताया कि यह धारा संविधान मे उनकी इच्छा के विपरीत डाली गई थी। उनके अनुसार जब शेख अब्दुल्ला ने पं. नेहरु से संविधान में इस प्रकार की धारा जोड़ने का आग्रह किया, तो पंडित जी ने शेख को उनके पास भेजा। वह विधि-मंत्री के साथ-साथ संविधान की ड्राफ्टिंग समिति के अध्यक्ष भी थे। शेख ने उन्हें जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने का आग्रह

किया और कहा कि सुरक्षा, विदेश-नीति, यातायात और करेंसी के अतिरिक्त केन्द्र सरकार का जम्मू-कश्मीर पर कोई अधिकार न होना चाहिए। उसने कश्मीर के लिए अलग नागरिकता और रियासत में किसी बाहर के व्यक्ति को जमीन खरीदने, नौकरी करने इत्यादि पर रोक-संबंधी कानून को बनाए रखने की वकालत भी की। इस बात पर उन्होंने शेख से कहा कि आप चाहते हैं कि भारत आपकी रियासत की सुरक्षा करे, वहाँ के लोगों को सस्ता अनाज दे, सड़कें बनाए और विकास के लिए धन लगाए, परंतु जम्मू-कश्मीर पर उसका कोई अधिकार और नियंत्रण न हो। उन्होंने ऐसा करने में अपनी असहमति प्रकट करने हेतु शेख से कहा कि मैं भारत के हितों की बलि चढ़ाने को तैयार नहीं।

डॉ. अम्बेडकर से निराश होकर शेख फिर पं. नेहरु के पास गए। पं. नेहरु में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह डॉ. अम्बेडकर पर ऐसा काम करने के लिए, जो स्पष्ट रूप से राष्ट्रहित के प्रतिकूल था, दबाव डालते। इसलिए उन्होंने यह काम गोपालस्वामी आयंगर को सौंपा। श्री आयंगर ने संविधान में शेख अब्दुल्ला के मन्तव्य के आशय की धारा 370 को जोड़ने का प्रस्ताव संविधान सभा में रखा। अधिकांश सदस्यों ने इसका विरोध किया। तब श्री आयंगर ने सरकार की ओर से संविधान सभा को आश्वासन दिया कि यह धारा अस्थायी है और सरकार को विश्वास है कि इसे शीघ्र ही खत्म कर अन्य राज्यों के स्तर पर लाया जा सकेगा। इसी कारण यह धारा भारत के संविधान के उस अनुच्छेद के अंतर्गत रखी गई जिसका शीर्षक है, "अस्थायी और बदली जाने वाली धाराएँ।"

एक और अवसर पर उनसे हरिजनों के लिए विधानसभाओं और सरकारी नौकरियों में आरक्षण की बात चली। मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि वह आरक्षण के पक्ष में नहीं थे। उनका कहना था कि जब तक आरक्षण रहेगा, हरिजन अपने पाँव पर खड़े नहीं होंगे और न उनमें खड़ा होने का आत्मविश्वास पैदा होगा। उनका कहना था कि वे हरिजनों को

सदा के लिए सहारा लेकर चलने वाला अपंग नहीं रखना चाहते। जब तक आरक्षण रहेगा, तब तक उनमें अपंग होने का भाव बना रहेगा, इसलिए वे चाहते थे कि आरक्षण पहले दस वर्षों के बाद खत्म कर दिया जाए। उनके द्वारा स्थापित "रिपब्लिकन पार्टी" के घोषणापत्र में भी यह बात स्पष्ट रूप में लिखी गई थी। इस प्रकार आरक्षण के संबध में उनका दृष्टिकोण तथाकथित राष्ट्रवादियों और हरिजनों के हितों के ठेकेदारों की अपेक्षा कहीं अधिक स्पष्ट, तर्कसंगत और राष्ट्रवादी था। वे हरिजनों के सबसे बड़े हितचिंतक थे, इसलिए उनके इस मत का विशेष महत्व है।

पाकिस्तान और मुसलमानों के विषय में चर्चा करने पर उन्होंने विभाजन के समय लिखी अपनी पुस्तक 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' में दिया गया मत दोहराया। इतिहास तथा मुस्लिम कानून और परंपरा के अध्ययन के आधार पर उनका यह स्पष्ट मत था कि पाकिस्तान में हिंदू रह नहीं सकेंगे और हिन्दुस्तान में रह गए मुसलमान अपनी मानसिकता नहीं बदलेंगे। उनका यह स्पष्ट मत था कि इस्लाम के मूल सिद्धान्त मुसलमानों को गैर-मुसलमानों के साथ बराबरी के आधार पर शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट हैं। उन्होंने इस मत को दोहराया कि यदि उनके सुझाव के अनुसार विभाजन के साथ ही हिन्दुस्तान में रह गए मुसलमानों और पाकिस्तान मे रह गए हिन्दुओं की अदला-बदली की बात मान ली गई होती और उसे योजनाबद्ध ढंग से कार्यान्वित किया जाता, तो खंडित हिन्दुस्तान की मुस्लिम समस्या खत्म हो जाती और यह विभाजन की एक उपलब्धि होती। वे उस भूल के लिए मूलतः गाँधी जी और पं. नेहरु को दोषी मानते थे।

पं. नेहरु के विषय में उनकी धारणा अच्छी नहीं थी। उनका कहना था कि कांग्रेस में कई अच्छे लोग हैं, परंतु पं. नेहरु के कारण वे दब गए हैं और अपनी बात कह नहीं पाते। उनके अनुसार पं. नेहरु को भारत के हितों की अपेक्षा अपनी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति और प्रतिष्ठा की चिंता अधिक रहती है,

इसलिए बहुत बार जाने या अनजाने में वह ऐसे फैसले और नीतियाँ बना लेते हैं, जिनमें राष्ट्रहित की उपेक्षा होती है।

डॉ. अम्बेडकर को निकट से देखने, सुनने और उनके चिंतन और व्यवहार से मुझे लगा कि वैदिक वर्ण व्यवस्था के अनुसार वे सच्चे ब्राह्मण हैं। उनकी बुद्धि प्रखर थी और वह हर विषय तथा समस्या की गहराई तक जाते थे। जो बात उन्हें ठीक नहीं लगती थी, उसे कहने में हिचकिचाते नहीं थे। उनमें विश्वास की दृढ़ता थी और उसके अनुसार काम करने की हिम्मत भी। वह सच्चे राष्ट्रवादी थे। उनके मन में पिछड़े वर्ग और हरिजनों के लिए तड़प थी, क्योंकि वे भुक्तभोगी थे, परंतु उनके मन में कटुता नहीं थी। वे पिछड़े वर्ग के हितों को राष्ट्रहित पर प्राथमिकता नहीं देते थे, परंतु उनका यह स्पष्ट मत था कि राष्ट्रहित और पिछड़े वर्ग के हितों में कोई टकराव न हो और राष्ट्र को सशक्त बनाने के लिए ऊँच-नीच के भेद दूर करके पिछड़े वर्गों के लोगों को ऊपर उठाना और उनके मनों में आत्मविश्वास और स्वाभिमान जगाना आवश्यक है।

यह दुर्भाग्य का विषय है कि अभी भी बहुत से लोग डॉ. अम्बेडकर को केवल पिछड़े वर्ग का नेता समझते हैं। वे पिछड़े वर्ग के नेता तो थे ही, उससे बढ़कर राष्ट्रनेता भी थे। राष्ट्रहित के संबंध में उनका चिंतन स्पष्ट था और उन्होंने कभी राष्ट्रहित के मामले में समझौता नहीं किया। कश्मीर और आरक्षण के संबंध में उनका दृष्टिकोण और कार्य इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं।

जे-394, शंकर रोड, नई दिल्ली-60

सज्जन लोग चाहे दूर भी रहें पर उनके गुण उनकी ख्याति के लिए स्वयं दूत का कार्य करते हैं। फूल की गंध सूँघकर भँवरा खुद उसके पास चला जाता है।

पंचतंत्र

होली

होली इस देश का सबसे अधिक आनन्द और उल्लास का पर्व है। ठिठुराने वाली शिशिर (शीत) ऋतु इस समय समाप्त हो जाती है। फाल्गुन समाप्त हो कर चैत्र आरम्भ होता है। वसन्त ऋतु पूरे यौवन पर होती है **'कुसुम जन्म ततो नवपल्लवास्तदनुषट्पद कोकिल कूजितम्'** (कालिदास), पहले बिल्कुल नंगी हो गई डालों पर फूल खिलते हैं; उसके बाद उन्हीं डालों में नये कोमल पत्ते निकलते हैं; उसके बाद भौंरे पुष्पमंजरियों पर गुँजार करने लगते हैं और बागों में कोयल कूकने लगती है, जिसे सुन कर मन मचलने लगता है।

किसान का आनन्द और अधिक होता है। देश की प्रमुख फसल आषाढ़ी पकने को तैयार होती है। गेहूँ की सुनहली बालें धूप में चमकती हैं और हवा से लहराती हैं। लोग गेहूँ, चने और मटर का नवान्न (नई फसल का अन्न, होले) भून कर खाते हैं। यही होली है। होले ही प्रह्लाद हैं, जो फूस की आग में तप कर भी बच जाते हैं–होलिका (तुष, और छिलका) जल जाती है।

लोकरंजन के लिए हिरण्यकशिपु, होलिका और प्रह्लाद की कहानी रची गई है। अभिमानी दैत्य राजा हिरण्यकशिपु स्वयं को भगवान् मानने लगा। उसका पुत्र प्रह्लाद मनुष्य की क्षुद्रता और परमेश्वर की महिमा को जानता और मानता था। अपना पुत्र ही विद्रोही हो जाये, इससे बड़ी खिझाने वाली बात और क्या हो सकती थी? हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को मरवाने के कई उपाय किये। उनमें से एक यह भी था कि उसकी बहिन होलिका प्रह्लाद को गोदी में लेकर जलती आग में बैठ जाये। होलिका में यह शक्ति थी कि वह आग में बैठ कर भी नहीं जलेगी। परन्तु हुआ यह कि धर्म के बल से प्रह्लाद तो अछूता बच गया और होलिका जल कर राख हो गई।

बाल बुद्धि के लोगों में धर्मपरायणता जगाने के लिए यह कहानी गढ़ी गई है। मनुष्य में ऐसा कुछ है कि वह पाप को, अत्याचार को देख कर क्षुब्ध और क्रुद्ध होता है और पाप को पराजित होते देख कर आनन्द से पुलक उठता है। कितनी ही

अपरिष्कृत होने पर भी इस बाल कथा को सुन कर अगणित लोग अत्याचारी के विनाश से आनन्दित होते रहे हैं।

होली मुख्यतः किसानों का त्यौहार है। फाल्गुन पूर्णिमा को, छिटकती चाँदनी में लकड़ी, फूस एकत्रित करके होली जलाई जाती है। यह यज्ञ का प्रतीक है। इस अवसर पर नर-नारी गीत गाते और नाचते हैं। रात भर होली गाई जाती है।

अगले दिन रंगों का पर्व होता है। घर-परिवार के लोग, इष्ट-मित्र एक दूसरे को गुलाल लगाते हैं, एक दूसरे पर रंग घोला हुआ सुगन्धित जल फेंकते हैं। आनन्द के आवेश में अपरिचित पर भी फेंक देते हैं। पहले अपरिचित भी बुरा नहीं मानते थे; आनन्दित ही होते थे। होली पर साल भर के वैमनस्य भुला दिये जाते थे और नया स्नेह बन्धन बनता था। किशोर-किशोरियाँ, युवक-युवतियाँ, भी इस एक दिन सामाजिक बन्धनों से कुछ ढील पा जाते थे और मर्यादित आनन्द उठाते थे। भाई-बहन, देवर-भाभी भी एक दूसरे को गुलाल मल देते थे।

परन्तु जैसे अनाज में घुन लगता है, वैसे ही होली के आनन्द पर्व में गुंडागर्दी आ घुसी। लोगों ने यह मान लिया कि होली के दिन उन्हें सारे अनाचार करने की छूट है। सुन्दर, सुगन्धित रंगों का स्थान गन्दे कीचड़, ग्रीज़ और पक्के रंगों ने ले लिया। गुंडों की टोलियाँ शराब पीकर सड़कों पर आने-जाने वाले अपरिचितों की दुर्गति करने लगीं। कई जगह तो लोग होली के नाम पर अपने प्रतिद्वन्द्वियों की हत्या तक करने लगे। दैवीय पर्व राक्षसी पर्व बन गया।

अन्य सब क्षेत्रों की भाँति होली के विषय में भी सुधार की आवाज़ उठी है और सभी विवेकशील लोग यह माँग कर रहे हैं कि प्रेम और आनन्द के इस पर्व को मर्यादित रूप से मनाया जाये। रंग केवल अपने परिचितों को, केवल उतना लगाया जाये, जितना उन्हें रुचे और वे प्रसन्न हों। होली का उद्देश्य आनन्दित होना और दूसरों को आनन्दित करना है, जिससे परस्पर प्रेम बढ़े। दूसरों को खिझाना, सताना या रुष्ट करना होली की भावना के प्रतिकूल है होली पर टेसू आदि वनस्पति से बने रंगों का प्रयोग करना चाहिए, ऐसी ही हमारी प्राचीन परंपरा थी।।

आखिर देश की वंदना में बुराई क्या है

–वेदप्रताप "वैदिक"

वंदे मातरम् पर कुछ मुसलमानों की आपत्ति और उस पर काँग्रेस का रवैया आजादी के बाद की सबसे अधिक दुखद घटनाओं में से है। यह घटना मुसलमानों और कांग्रेसियों के लिए कितनी अधिक नुकसानदेही साबित होगी, उसका अंदाज शायद उन्हें अभी नहीं है। राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत, राष्ट्रीय संविधान आदि ऐसे सर्वमान्य प्रतीक होते हैं, जिन्हें अपनी सभी पहचानों से ऊपर माना गया है। कोई राष्ट्र इस्लामी हो या ईसाई, साम्यवादी हो या पूँजीवादी, धर्म सापेक्ष हो या धर्म निरपेक्ष, वह अपनी राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीकों को सर्वोपरि मानता है। इन प्रतीकों पर प्रश्नचिह्न लगाना देशद्रोह माना जाता है।

लेकिन क्या वंदे मातरम् पर प्रश्नचिह्न लगाने वाले कुछ गुमराह मुसलमानों और उन्हें छूट देने वाले कांग्रेसियों को देशद्रोही कहना उचित नहीं? हाँ! बुद्धिद्रोही जरूर कह सकते हैं। वंदे मातरम् का विरोध जिस आधार पर मुसलमान कर रहे हैं, वह आधार ही निराधार है। वंदे मातरम् में इस्लाम या मुसलमानों की कोई आलोचना या निंदा होना तो बहुत दूर की बात है, उनका जिक्र तक नहीं है। इसमें मातृभूमि की वंदना की गई है, पूजा नहीं। अगर पूजा की बात भी कही जाती, तो उसमें गलत क्या था? यदि मातृभूमि पूज्य है, तो भगवान और अल्लाह परमपूज्य हैं। दोनों में कोई विरोध नहीं है। वंदे मातरम् के अंतिम पद में दुर्गा, कमला और सरस्वती का जिक्र आया है, लेकिन कहीं भी उनकी पूजा करने की बात नहीं कही गई है। सिर्फ यह कहा गया है कि हे मातृभूमि, 'त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी, कमला कमलदलविहारिणी, वाणी विद्यादायिनी' यानी कवि ने मातृभूमि की तुलना दुर्गा (शक्ति), कमला (संपदा), वाणी (ज्ञान) से की है। यदि राष्ट्रगीत में मातृभूमि को शक्ति, संपदा और ज्ञान का मूर्तिमंत रूप कहा जाए, तो इसमें इस्लाम विरोधी कौन सी बात है? मातृभूमि के आराधान की बात बांग्लादेश और इंडोनेशिया जैसे लगभग सभी इस्लामी देशों के राष्ट्रगान में भी आई है। यदि भारत के राष्ट्रगीत में दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की उपमा का इस्तेमाल

नहीं होगा, तो क्या जॉन ऑफ आर्क, क्वीन विक्टोरिया या हजरते आयशा का होगा? ये भी महान महिलाएँ हुई हैं, लेकिन भारतीय संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता नगण्य है। इसके अलावा भारत के राष्ट्रगीत में शुरू के केवल दो पद लिए गए हैं। बाद के वे पद लिए ही नहीं गए, जिनमें इन देवियों के प्रतीकों का इस्तेमाल किया गया है फिर भी वंदे मातरम् को इस्लाम विरोधी कहना कहाँ तक तर्कसंगत है? यह खेद की बात है कि 1937 में कांग्रेस ने और 1948 में संविधान सभा ने पूरे वंदे मातरम् की बजाय उसके सिर्फ पहले दो पदों को ही राष्ट्रगीत माना। हमारे अंग्रेजीदाँ नेता बंकिमचन्द्र के इस महान गीत का सही अर्थ समझ नहीं पाए और मुस्लिम लीग के मिथ्या प्रचार से डर गए।

वंदे मातरम् बंकिमचन्द्र के उपन्यास 'आनन्द मठ' में उन साधुओं ने गाया है, जो बगावत कर रहे थे। संयोग की बात है कि जिस शासक के विरुद्ध वे बगावत कर रहे थे, वह मुसलमान था। मान लें कि वह हिंदू होता या अंग्रेज होता, ईसाई या यहूदी होता, तो क्या यही गीत उसके विरुद्ध भी नहीं गाया जाता? इसमें इस्लाम या मुसलमान का विरोध नहीं है, एक विदेशी आक्रांता-अत्याचारी शासक का विरोध है। हमारे आज के मुसलमान उस अत्याचारी शासक की तरफदारी क्यों करें? क्या सिर्फ इसीलिए कि वह अपने नाम से मुसलमान था? उपन्यास के एक दुष्ट पात्र के कारण भारत के करोड़ों देशभक्त मुसलमान अपने आपको संदेह के कटघरे में क्यों खड़ा करें? इसके अलावा यह गीत 1876 में लिखा गया, यानी आनंद मठ के प्रकाशित होने के सात साल पहले। इसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व और महत्व है। इसे सिर्फ उस उपन्यास की कहानी का हिस्सा मानना इस महान गीत के साथ अन्याय करना है। यह गीत इसलिए भी महानता के पद पर पहुँच गया कि इसे गा-गाकर हजारों लोगों ने मृत्यु का वरण किया, लाखों, लोगों ने जेल काटी और करोड़ों लोगों ने स्वाधीनता संग्राम की प्रेरणा ली।

केवल मुस्लिम लीग ने इस गीत का विरोध किया, पहले नासमझी के कारण और फिर जानबूझकर! काँग्रेस के हर अधिवेशन का समारंभ इसी गीत से होता था। 1896 में

रवींन्द्रनाथ ठाकुर ने कोलकाता काँग्रेस में इसे गाया और 1905 में महात्मा गाँधी की परमप्रिय मित्र सरला देवी चौधरानी ने इसे लाहौर अधिवेशन में गाया। बाद में कई वर्षों तक पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर इसे गाते रहे। 1923 में काँग्रेस अध्यक्ष मौलाना मुहम्मद अली ने वंदे मातरम् का विरोध इस आधार पर किया कि इस्लाम में संगीत वर्जित है। पलुस्कर ने खड़े होकर कहा, यह काँग्रेस अधिवेशन का पंडाल है, कोई मस्जिद नहीं है। काँग्रेस अध्यक्ष यदि अपने जुलूस में संगीत का रस लेते रहे तो उन्हें यहाँ ऐतराज क्यों है? वास्तव में उन्हें ऐतराज न तो संगीत से था और न ही वंदे मातरम् से। वे खफा थे गाँधी और काँग्रेस की लोकप्रियता से। वंदे मातरम् का विरोध उनके अलगाववाद का मूल मंत्र था। अब भी उसी मुस्लिम लीगी मानसिकता से चिपके रहना कहाँ तक उचित है? यदि यही मानसिकता पनपती रही तो मुसलमानों का नुकसान होगा।

यह मुस्लिमलीगी मानसिकता है, मुस्लिम मानसिकता नहीं! यदि वह मुस्लिम मानसिकता होती तो स्व. बिस्मिल्ला खान बाबा विश्वनाथ के मंदिर में बैठकर 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' क्यों बजाते और सारे मुसलमान कहते कि खान साहब के शव को बंदूकों की सलामी क्यों दी गई, यह तो जड़-पूजा है, बुतपरस्ती है, इस्लाम विरोधी हरकत है। पाकिस्तान के नागरिक होते हुए भी मेहंदी हसन गाने के पहले सरस्वती वंदना क्यों करते हैं? मुसलमान होने का मतलब अपनी परंपरा से पूरी तरह कट जाना नहीं है। इक़बाल को क्या जरूरत थी, यह कहने की कि 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा'? उन्होंने राम को 'इमामे हिन्द' क्यों कहा? रसखान ने चाँदी के महल कन्हैया पर क्यों निछावर किए? ताज बीबी ने यह क्यों कहा कि 'लाम' के मानिंद है गेसू मेरे घनश्याम के' क्या इक़बाल, रसखान, ताज बीबी आदि इस्लाम विरोधी थे? मूर्तिपूजा का विरोध मुसलमानों से ज्यादा आर्यसमाजी करते हैं, लेकिन क्या उन्होंने कभी वंदे मातरम् पर उंगली उठाई?

मुसलमान होने का मतलब अरबों की कार्बन कॉपी बनना नहीं है या खुद को घसीटकर सत्रहवीं सदी की कोठरी में फेंक देना नहीं है। जो लोग वंदे मातरम् का विरोध कर रहे हैं, वे अक्ल के दुश्मन तो हैं ही, मुसलमानों के भी दुश्मन हैं।

The Monk Who's A Youth Icon

-Swami Shantatmananda

January 12, 2014 is the 151st birth anniversary of Swami Vivekananda. The three-year-long celebration was launched on January 12, 2012, with a series of lectures, events and programmes in remembrance of the monk's inspiring philosophy that has motivated youth for more than a century. Naturally, the focus of the celebrations is youth and their potential to bring about positive change.

Follow The Swami

The curator of the exhibition observed that even if 20 per cent of Swamiji's teachings are followed, our country could be transformed into a role model—yet that has not happened. I had to admit that those of us who profess to be followers of Swamiji have to accept the responsibility for the state of affairs since we have not really stretched ourselves in taking his message to the youth in a major way.

When I address young audiences, I often pose a question, 'How relevant do you feel are the messages of Swamiji to your generation?' I ask because I feel that our youth have not been able to connect to Swamiji in a real and powerful way. So, let us try to make an honest assessment of this ideas.

Anyone who goes through the details of Swami Vevekananda's life, particularly the youth, has a lot to learn and gain. Although born in a very affluent family Narendra Nath (Swamiji's premonastic name) had to suffer poverty and deprivation even before the age of 20. He could not land an ordinary job to feed his widowed mother and siblings. But, with extraordinary courage, conviction and sincerity of purpose, he forged ahead in life. Endowed with brilliant intellect and a powerful and rational mind, he would not accept anything that did not stand the test of reason or logic. Several incidents in his life, stand witness to this quality. Hence, he is regarded as a youth icon.

Swami Vivekananda was not only an erudite philosopher and

motivational speaker, he was also a great patriot. M.K. Gandhi and Jawaharlal Nehru have paid glowing tributes to his patriotism. But, more remarkable is the observation of Sister Christine, a western admirer: "Our love for India was born, I think, when we first heard him say the word, 'India', in that marvellous voice of his. It seems incredible that so much could have been put into one small word of five letters. There was love, passion, pride, longing, adoration, tragedy, chivalry, and again, love. Whole volumes could not have produced such a feeling in others. It had the magic power of creating love in those who heard it. Ever after, India became the land of your heart's desire..."

Following Swamiji's popularity at the Chicago World Parliament of Religions in 1893, some of the wealthiest people of America became his hosts. But, he could never enjoy such luxuries. He would often sleep on the floor. He was a keen student of history and a great visionary. He had travelled the length and breadth of India practically on foot. He had firsthand knowledge of India's culture, tradition, its past and degradation that was evident in his times and is true even now.

But, at the same time, he was absolutely sure that India would experience a glorious regeneration. He said, 'I see in my mind's eye the future perfect India rising out of this chaos and strife, glorious and invincible. He was emphatic that uplift of the process of regeneration. He had great faith in youth and said that the young would work out all the problems like lions. His words were soul-stirring: "You are all born to do it. Have faith in yourselves; great convictions are the mothers of great deeds. Onward forever! Sympathy for the poor, the less privileged, even unto death -- this is our motto. Onwards brave youngsters!"

India seems to be in a state of transition. While we boast of a high percentage of youth in our population and project robust economic growth, yet society is in a state of turmoil where there is free play of corruption and brutalisation of women. Our eco-

nomic growth only seems to widen the gap between the rich and the poor. If the country is to emerge unscathed out of the current chaos, youth need a powerful role model. Do they need to look beyond Swami Vivekananda? While other leaders can inspire the youth in limited ways, Swamiji's inspiration is universal.

Anyone, particularly youth, wishing to excel in any area or dimension of life can adopt Swamiji as his role model. His life and message is capable of inspiring all-around and inclusive excellence because his inspiration is based on fundamentals and foundational principles such as Shraddha or dedication, courage, sacrifice and service. He said, 'I want each one of my children to be a hundred times greater than I could ever be. Everyone of you must be a giant–must, that is my word. Obedience, readiness, and love for the cause–if you have these three, nothing can hold you back.' He added, 'Work unto death - I am with you, and when I am gone, my spirit will work with you.' How true his assurance is!

Epiphanic Moment

A couple of months back, I had gone to address a group of principals from CBSE schools. There I met a lady who is a heritage specialist. After her inspiring address, she started narrating her life story. She said after struggling for two decades, she had to call off her marriage in 2005. Soon after, she visited our Belur Math R.K. Mission headquarters in Kolkata with a group of students. Standing on the banks of the Ganga behind the temple of Swami Vivekananda-where his mortal remains where consigned to flames-she closed her eyes and stood in silence for two minutes. She felt he blessed her. She said that since then, she had not looked back. Even recalling the experience seemed to move her to tears and new resolve.

Secretary,
R.K. Mission, Delhi

What Is An Ego?
I. Ego a False Reality

-Sadhguru

Ego is not something that you got because you did something well, or you became rich or beautiful. When you started kicking in your mother's womb, the very first mistake of getting identified with your physical body means the ego was born.

Ego is a defence mechanism. You got identified with this little body. This little organism is to survive in this vast existence of which you have no perception to even know where it begins and where it ends. Just to survive, you have to project yourself like a big man, so the ego is born. It is a false reality, like your shadow.

To handle different situations in our lives, we need different identities. If you are fluid about it, if you can change from one to another gracefully, you can play your role to the hilt and still have no problem. But right now the problem is you get so identified with it; you start believing you are that. Once believe 'I am the shadow', what would you do? You would naturally crawl upon the earth. How will life be? If we carpet the floor, you will crawl in comfort, not in joy. Suppose rocks and thorns came? You will cry. That is how your life is going on right now.

Right now your whole experience of life may be limited to the physical.Everything that you know through your five sense perceptions is physical, and the physical has no perpose of its own, it is there only as a peel, a protective layer to the fruit. This body is important because there is something else inside. You have never experienced that something else. If that something else goes away tomorrow, no body would want to touch this body. So, today is the time to take care of it.

If things go dead wrong for you, and you can still go through this life untouched, peacefully, joyfully, then you know life the way it is. Otherwise you are just a slave of the physical.

II. Say 'go' to Ego

-P. P. Wangchuk

Ego must go because it is your enemy within. As someone had said that ego competes all the time with your spirit for control over your inner voice. It bloats you like a balloon beyond its capacity and goes 'phut'. The same thing happens with those who can't control their ego.

Inspirational writer Ajit Kumar Bishnoi, in his latest book, Spiritual Sense-The Principles, quotes the Bhagavad Gita that there are two types of ego-the real/good ego and false ego. Those with real ego take pride in the greatness of their material body and position.

Generally, when we call someone egoistic, it means that the person is foolish enough to think that his position and status etc. make him a great person. He fails to realise that he is standing on a podium that could collapse any moment.

One should understand that one's wealth and position etc. are of no use until they are of use to others. Only humility can make one think this way and make one understand other's difficulties. That also makes one realise one's mistakes to take early corrective action. A wise person is one who realises his mistakes. Only an egoless person can hope to do so. As Bishnoi says, one should be great enough to laugh at one's own mistakes and unbecoming behaviour.

One should be smart enough to learn from iconic people who could reach where they are today just because they knew their real worth and did not make a fool of themselves. Lord Tennyson perhaps had this in mind when he said, "I am but a fool to reason with a fool".

There is a cute David O. Russel quote on ego in the context of boxing: "The most beautiful thing that I like a punch. The biggest thing about taking a punch is that your ego reacts and there is no better spiritual lesson than trying not to pay attention to your ego's reaction."

RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2011-2013

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।।
सचस्वा नः स्वस्तये।। यजु. 3/24।।

ऋषि – वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा, देवता–अग्निः, छन्द–गायत्री

हे (अग्ने) तेजस्वी ईश्वर आप हमारे लिए "सूपायनः" सुख से प्राप्तव्य हो और सदा उत्तम स्थान के दाता और हमारे रक्षक हो। हे कल्याणकारी परमेश्वर! आप सब दुःखों का नाश करके हमें सदा सुख प्राप्त कराइए ताकि हमारा वर्तमान जीवन सुखमय हो। "स नः पितेव सूनवे" जैसे करुणामय पिता अपने पुत्र को सुखी रखता है वैसे ही आप हमें सदा सुखी रखो। क्योंकि यदि हम बुरे होंगे तो यह आपको शोभा नहीं देगा और सन्तानों को सुधारने वाले पिता की सभी जगह प्रशंसा होती है।

Oh Self-effulgent God, You are Lustrous with the light of true Knowledge. May You be easily accessible to Your devotees, always bestowing upon them the best means of happiness. Oh Lord, You alone are our Protector from all types of evils. Oh God You are Gracious and are the real cause of our well-being. Kindly dispel all our miseries and make us blissful, so that we may be ever feeling quite excellent in our life in every way. As a kind father always acts for the happiness of his offsprings, so You also work for our welfare. If we, Your children go astray, it will not rebound to Your glory.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58